नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टि का उद्घोष

संसद में जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 'ऑपरेशन महादेव' और 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विस्तार से जानकारी दी, तो यह केवल सरकार की कार्रवाई का ब्योरा नहीं था, बल्कि यह भारत की बदलती राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टि का उद्घोष था. कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष नागरिकों की बर्बर हत्या, और उसके बाद सुरक्षाबलों की तेज़, लक्षित और निर्णायक प्रतिक्रिया,इन दोनों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारत आतंकवाद के प्रति 'सहानुभूति नहीं, सिर्फ़ प्रतिशोध' की नीति पर चल रहा है.

पहलगाम में हुई नृशंस हत्याएं किसी भी सभ्य समाज के लिए अस्वीकार्य थीं. धर्म पूछकर नागरिकों को उनके परिवार के सामने गोलियों से भून देना, यह आतंक का वह चेहरा है जो मानवता को चुनौती देता है. भारतीय सेना, सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस की त्वरित और सटीक कार्रवाई में लश्कर-ए-तैयबा के तीन ए-ग्रेड आतंकियों,सुलेमान उर्फ फैजल, अफगान और जिबरान को ढेर कर दिया गया. यह न केवल सटीक खुफिया तंत्र का परिणाम था, बल्कि यह एक मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रमाण भी है.

ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, वह भारत की संप्रभुता और आत्मरक्षा के अधिकार का सशक्त प्रयोग था. पाकिस्तान स्थित 9 आतंकी अड्डों पर जब भारतीय बलों ने 7 मई को दोपहर के 20 मिनट में कहर बरपाया, तो यह स्पष्ट कर दिया गया कि भारत अब हमलों का इंतजार नहीं करता, वह खतरे के स्रोत तक जाकर प्रहार करता है. अमित शाह द्वारा दी गई यह जानकारी कि पाकिस्तान के नागरिकों को नुकसान नहीं पहुंचाया गया, यह भी दर्शाता है कि यह बदले की नहीं, बल्कि न्याय की कार्रवाई थी. यह कार्यवाई अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की स्थिति को नैतिक रूप से और मज़बूत बनाती है, क्योंकि यह एक संप्रभु राष्ट्र द्वारा आत्मरक्षा के अधिकार का सीमित, सटीक और जिम्मेदार उपयोग था. डीजीएमओ स्तर की संवाद प्रक्रिया ने भारत की इस नैतिकता को और मज़बूत किया.

गृह मंत्री का यह कहना कि जब आतंकियों के मारे जाने की खबर आई, तो विपक्ष खुश नहीं हुआ, यह केवल राजनीतिक कटाक्ष नहीं है, यह एक गहरा प्रश्न है. क्या आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में भी हम विभाजित रहेंगे? पूर्व गृहमंत्री पी. चिदंबरम के बयान कि 'क्या सबूत है कि ये आतंकी पाकिस्तान से आए थे?' न केवल देशवासियों को विचलित करता है, बल्कि यह उस राजनीति की ओर भी संकेत करता है जिसमें राष्ट्र की सुरक्षा से ज्यादा अहम विपक्ष की असहमति हो जाती है. अमित शाह का यह दावा कि आतंकियों के पास से पाकिस्तान निर्मित वस्तुएं, वोटर आईडी जैसे प्रमाण मिले हैं .इसके बाद भी 130 करोड़ नागरिक इन विरोधाभासों को देख रहे हैं, और आने वाले समय में इसका मूल्यांकन भी करेंगे. ऑपरेशन महादेव और ऑपरेशन सिंदूर भारत के आतंकवाद विरोधी अभियान में मील के पत्थर हैं. यह साबित करता है कि सुरक्षा बलों को जब राजनीतिक समर्थन और पूरी स्वतंत्रता मिलती है, तो वे अद्वितीय परिणाम दे सकते हैं. लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा केवल गोलियों से नहीं, राजनीतिक एकजुटता से भी सुरक्षित होती है. इस मोर्चे पर विपक्ष की भूमिका निराशाजनक रही है.

सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों की ज़िम्मेदारी है कि वे आतंकवाद जैसे सवालों पर राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र की बात करें. जब मां अपने बेटे को खोती है, जब नवविवाहिता विधवा होती है,तब पार्टी नहीं, केवल देश होता है. यही भावना अगर संसद में हो, तो 'ऑपरेशन महादेव' और 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे मिशन सिर्फ़ सैन्य विजय नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक गर्व बन जाएंगे.

भारत का विरोध विपक्ष का धर्म नहीं

डॉ. सुदीप शुक्ल

> आज आवश्यकता इस बात की है कि विपक्ष यह आत्मावलोकन करे कि वह किस हद तक जा सकता है. सवाल पूछिए, सरकार से बहस कीजिए, योजनाओं की आलोचना कीजिए लेकिन भारत की सेनाओं, एजेंसियों और रणनीतिक निर्णयों को बदनाम करने की कीमत पर नहीं. सरकारें आती-जाती रहेंगी, लेकिन भारत रहेगा. सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को यह स्मरण रखना चाहिए कि राष्ट्रीय सुरक्षा कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का प्रश्न है. विपक्ष का विरोध सरकार से हो सकता है, लेकिन भारत से नहीं. यह पंक्ति केवल भाषणों में दोहराने के लिए नहीं, बल्कि व्यवहार में लाने के लिए है. आज जब भारत सीमापार आतंक के विरुद्ध निर्णायक मोर्चे पर खड़ा है, तब हमारे अपने नेता ही अगर सैनिकों के पराक्रम और खुफिया एजेंसियों की सूचनाओं पर सवाल खड़े करें, तो यह देशहित नहीं, राष्ट्रविरोध की ओर एक खतरनाक झुकाव है. राजनीतिक प्रतिस्पर्धा लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन राष्ट्रहित उसकी मर्यादा .विपक्ष को यह सीमा समझनी ही होगी, क्योंकि विपक्ष बदल सकता है, सरकार बदल सकती है पर भारत नहीं बदलता.

विपक्ष की पुरजोर मांग के बाद ऑपरेशन सिंदूर पर लोकसभा में हुई विशेष चर्चा का हासिल क्या रहा? क्या विपक्ष इस विषय पर गंभीरता से बहस करने में सफल रहा या मार्गभ्रम में एक ऐसी स्थिति का शिकार हो गया जिसमें उसका रुख देश की छवि को क्षति पहुंचाने वाला रहा? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर राजनीतिक विश्लेषक तलाश रहे हैं. लोकसभा में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जब ऑपरेशन सिंदूर की रूपरेखा सदन के समक्ष रखी, तो उनका बयान स्पष्ट और तथ्यपरक था. उन्होंने सदन को बताया कि भारत की सेना ने सीमापार पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में स्थित प्रमुख आतंकी ठिकानों पर सटीक और सीमित कार्रवाई की.

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि हमारे पास कई सैन्य विकल्प थे, लेकिन हमने वही मार्ग चुना जिससे आतंकियों को अधिकतम क्षति पहुँचे और निर्दोष नागरिकों का नुकसान न हो. यह फैसला पूरी तरह भारत की संप्रभु रणनीतिक प्राथमिकताओं पर आधारित था. किसी भी प्रकार के अंतरराष्ट्रीय दबाव में हम नहीं आए. राजनाथ सिंह ने यह भी रेखांकित किया कि भारत अब आतंक के विरुद्ध रक्षात्मक नहीं, आक्रामक और सक्रिय रणनीति अपना रहा है. उन्होंने विपक्ष को याद दिलाया कि सेना और खुफिया एजेंसियाँ हर समय सजग हैं और जवाबी कार्रवाई पूरी तैयारी के साथ की गई है. ऑपरेशन सिंदूर रुक आवश्यक है लेकिन अभी खत्म नहीं हुआ है.

सरकार से सवाल पूछना विपक्ष का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन पहलगांव जैसे गंभीर आतंकी हमले के बाद कुछ विपक्षी नेताओं का रवैया ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे सरकार से नहीं, बल्कि स्वयं भारतीय सेना, खुफिया एजेंसियों और भारत की अंतरराष्ट्रीय साख पर सवाल उठा रहे हों. इस संदर्भ में सबसे विवादास्पद बयान कांग्रेस नेता एवं पूर्व केंद्रीय गृहमंत्री पी. चिदंबरम का रहा. उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा क्या उन्होंने आतंकियों की पहचान की है? वे कहाँ से आए थे? हो सकता है कि वे हमारे ही देश के आतंकी हों. आप क्यों मान रहे हैं कि वे पाकिस्तान से आए थे? इसका कोई सबूत नहीं है. यह वाक्यांश बेहद गैरजिम्मेदाराना इसलिए है क्योंकि इससे पाकिस्तान को खुला तर्क मिलता है यह कहने के लिए कि भारत में जो भी आतंकी घटनाएँ होती हैं, वे घरेलू चरमपंथ के परिणाम हैं.

क्या यह वही कांग्रेस है जिसने मुम्बई हमलों के बाद पाकिस्तान की भूमिका को पूरी दुनिया के सामने उजागर किया था? आज उसी पार्टी के वरिष्ठ नेता भारत की खुफिया जानकारी को ही खारिज कर रहे हैं, वह भी तब जबकि साक्ष्य मौजूद हैं, आतंकी मॉड्यूल ध्वस्त हो चुका है, और सीमापार फोन कॉल इंटरसेप्ट किए जा चुके हैं. बयान के बाद उठे भारी विवाद पर हालांकि चिदंबरम ने सफाई दी कि उनके इंटरव्यू को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया. परंतु जब मूल वक्तव्य ही भारत की आतंकवाद विरोधी नीति पर सीधा प्रहार करता हो, तो संदर्भ की सफाई भी बेमानी लगती है.

विपक्ष सरकार से सख्त सवाल पूछे, नीति की समीक्षा करे, यह एक स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है लेकिन जब सरकार से असहमति राष्ट्र की नीतियों और सुरक्षा बलों के पराक्रम पर अविश्वास का रूप ले ले, तब वह लोकतंत्र नहीं, आत्मघाती प्रवृत्ति बन जाती है. पहलगांव हमले पर हुई बयानबाज़ी के पीछे राजनीतिक लाभ की मंशा अधिक स्पष्ट थी, न कि राष्ट्रहित की चिंता. भारत जैसे देश में जहाँ सीमापार आतंकवाद एक स्थायी चुनौती है, वहाँ यह अपेक्षा की जाती है कि राजनीति कम से कम सुरक्षा के विषय पर एकजुट हो. वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि सरकार की रणनीति की विवेचना तथ्यों पर आधारित हो, न कि संदेह या आरोपों के आधार पर.

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

मालवा- निमाड़ की डायरी

संभावित सीट के लिए भाजपा नेताओं की जमावट शुरू

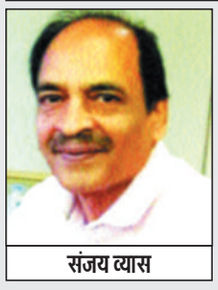

संजय व्यास

पिछले 2018 के चुनाव को छोड़ दें तो पूर्व विधान सभा अध्यक्ष बृजमोहन मिश्र की पुत्री व पूर्व मंत्री अर्चना चिटनीस बुरहानपुर विधान सभा सीट की पर्याय बनी हुई हैं. क्षेत्र में अच्छी पकड़ और संघ का उन पर वरदहस्त उन्हें यहां से चार चुनाव जिता चुका है. भाजपा सरकार में शिक्षा मंत्री रह चुकीं अर्चना चिटनीस को 2018 में एंटी इनकंबेंसी के कारण निर्दलीय प्रत्याशी सुरेंद्र सिंह ठाकुर शेरा के हाथों अपनी पारंपरिक बन चुकी यह सीट गंवानी पड़ी थी. 2023 में पुनर्वापसी कर उन्होंने शेरा (अब कांग्रेसी) को हरा दिया था. अर्चना चिटनीस के रहते बुरहानपुर सीट पर दावेदारी जताते रहे मनोज तारवाला, हर्षवर्धन सिंह चौहान, मनोज लधवे व अन्य दरकिनार किए जाते रहे. ऐसे ही दावेदारों को अब उम्मीद के पंख लगे हैं, कारण 2026 का होने वाला परिसीमन है.

चर्चा है कि नए परिसीमन में बुरहानपुर जिले में एक और सीट शाहपुर विधान सभा का पुनर्उदय होगा. पिछले परिसीमन के पहले भी शाहपुर विधान सभा सीट अस्तित्व में थी. नई सीट बनने से भाजपा नेताओं को आशा है कि दावेदारों का क्षेत्र में विभाजन होगा. इस स्थिति में भाजपा नेताओं द्वारा अभी से जमावट शुरू कर दी गई है. हालांकि गत चुनाव में बगावती सुरों के कारण कुछ दावेदार पार्टी की अनुशासनात्मक कार्रवाई की चपेट में आ चुके हैं. वे फिर नए सिरे से भाजपा नेतृत्व की नजरें इनायत में लग गए हैं. इनके अलावा नेपानगर विधायक मंजू दादू पूर्व क्षेत्रीय विधायक सुमित्रा कास्डेकर से अनबन और प्रतिस्पर्धा की वजह से अपना क्षेत्र बदलने की मंशा रखतीं हैं. उनकी नजर भी संभावित शाहपुर सीट पर है.

जिज्ञासा का अंत नहीं हो रहा

अंचल में कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान की पर्यवेक्षकों ने प्रक्रिया पूर्ण कर नामों के पेनल दिल्ली दरबार को सौंप दिए हैं. अब कार्यकर्ता-दावेदारों को परिणाम का इंतजार है. कहा जा रहा था कि जुलाई माह में जिला संगठन पदाधिकारियों की घोषणा कर दी जाएगी. माह के अंतिम दिवस चल रहे हैं और जिज्ञासा का अंत नहीं हो रहा. वैसे युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष के पदों के लिए भी लड़ाई दिलचस्प है. हर एक जिले में दो और तीन से ज्यादा उम्मीदवार हैं. इस मामले में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का जिला सबसे ज्यादा खास है, क्योंकि धार जिले में सबसे ज्यादा 15 उम्मीदवारों ने युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष का चुनाव लड़ा है.

पुराने फार्म में लौटे शाह

कर्नल सोफिया टिप्पणी विवाद में घिरे हरसूद विधायक व प्रदेश सरकार में जनजातीय कार्य विभाग के मंत्री कुंवर विजय शाह उच्च न्यायालय के निर्देश पर उन पर दर्ज पुलिस प्राथमिकी और एसआईटी जांच के बाद एक तरह से सार्वजनिक जीवन के प्रति सुप्तावस्था में चले गए थे. प्राथमिकी के खिलाफ मामला सर्वोच्च न्यायालय में लेकर पहुंचे शाह की सुनवाई विचाराधीन है. इस दौरान मंत्रिमंडल बैठकों से भी वे किनारे रहे. अब लगता है शाह ने अपना भविष्य सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर छोड़ दिया है इसीलिए फैसले की प्रतीक्षा के बजाय उन्होंने अपने पुराने फार्म में लौटना ठीक समझा. इसी तारतम्य में वे विगत दिनों खंडवा के खालवा विकासखंड के ग्राम जामनी गुर्जर स्थित कन्या शिक्षा परिसर पहुंचे, जहां उन्होंने छात्राओं के साथ बैठकर भोजन किया और उनकी समस्याएं सुनी. यही नहीं शाह ने एक पालक की तरह उनकी प्रगति, उच्च शिक्षा व सुविधाएं दिलाने में हर संभव सहायता की बात कही. उल्लेखनीय है कि शाह जब-तब विद्यार्थियों के बीच उनकी बात सुनने जाकर अपनतत्व का अहसास कराते रहते हैं. क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता का कारण शाह की सरलता ही है. इसके अलावा वे नए भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल से मुलाकात करने बैतूल और अपनी कुलदेवी झूलेवाली माता पूजन के लिए हरसूद भी गए, साथ ही जनता से मेल मिलाप कर हाल भी जाने.

ब्रेडमैन का रिकॉर्ड तोड़ा

गिल ने खुश किया दिल

भारतीय क्रिकेट कप्तान शुभमन गिल का 86 वर्ष पुराना डॉन ब्रेडमैन का रिकॉर्ड तोड़ना देश का सिर गर्व से ऊंचा करने वाली बात है. 25 वर्ष की उम्र में ऐसे तेवर दिखाए कि एक टेस्ट सीरीज में 4 सेंचुरी बना डाली. इसके पहले यह कारनामा सुनील गावस्कर 1971 व 1978 में तथा विराट कोहली 2014-15 में कर चुके हैं. शुभमन जिस फार्म में चल रहे हैं उसमें आगे भी कई रिकार्ड तोड़ने की उनसे उम्मीद की जा सकती है. इतना अवश्य है कि इंग्लैंड की पिच बल्लेबाजों के लिए अनुकूल है। जबकि गेंदबाजों को थकाने व हताश करने वाली है. टेस्ट मैच का बेनतीजा समाप्त होना दर्शकों को मजा नहीं देता क्योंकि सभी के दिलोदिमाग में टी-20 का फटाफट क्रिकेट समाया हुआ है. टेस्ट मैच को जीवंत और आकर्षक बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ उपयुक्त फेरबदल करने होंगे. टेस्ट मैच में बैटर को अत्यंत धैर्यपूर्वक खेलना होता है. क्लोज फील्डिंग और स्लिप्स में 3-4 फील्डर मौजूद रहते वह जिम्मेदारी से संभलकर खेलता है. इसके पहले भी चाहे दि वॉल कहलाने वाले राहुल द्रविड़ या पुजारा का खेल यही दिखाता था कि ये खिलाड़ी खासतौर पर टेस्ट के लिए ही बने हैं. बड़ा स्कोर बनाना है तो लापरवाह शॉट्स लगाने से बचना होता है. गिल ही नहीं उनकी टीम के अन्य बैटर भी इसी अंदाज में खेल रहे हैं. मैनचेस्टर टेस्ट में वॉशिंगटन सुंदर ने 206 गेंदों पर 101 रन बनाकर अपनी सेंचुरी पूरी की. जडेजा 185 गेंदों का सामना कर 107 रन बनाकर नॉट आउट रहे. शुभमन गिल तो ऐसे समय बैटिंग के लिए आए जब स्कोर शून्य था और 2 विकेट उड़ जाने से सनसनी थी. उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कप्तान की पारी खेली. विगत में देखा गया कि कुछ खिलाड़ियों की बल्लेबाजी कप्तानी के बोझ तले दब गई थी. गिल के साथ ऐसा कुछ नहीं है. उन्होंने बेन स्टोक्स का मैच ड्रॉ करने का पहला ऑफर ठुकरा दिया और सुंदर व जडेजा के शतक के बाद ही मैच ड्रॉ करने पर सहमति जताई.

निशानेबाज

मोदी भगवान विष्णु के 11वें अवतार राज पुरोहित को हुआ साक्षात्कार

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र के बीजेपी नेता राज पुरोहित और पार्टी के प्रवक्ता अवधूत वाघ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भगवान विष्णु का 11 वां अवतार बताया है. क्या यह सचमुच संभव है या वे अंधविश्वास फैला रहे हैं?

हमने कहा, यह सावन के पावन महीने के दौरान मन में उठने वाली ईश्वरीय अनुभूति है. इसे आप इन दोनों नेताओं के दिव्य ज्ञान का साक्षात्कार मान लीजिए. जब श्रद्धा-भक्ति सर्वोच्च शिखर पर जा पहुंचती है तो महान योगियों को ईश्वर के दर्शन होते हैं. राज पुरोहित और अवधूत वाघ ने अपने ज्ञान को गुप्त नहीं रखा बल्कि वरिष्ठ सरकारी वकील उज्ज्वल निकम के राज्यसभा सदस्य चुने जाने पर दादर में आयोजित अभिनंदन समारोह में व्यक्त भी कर दिया. इस मुद्दे पर निकम जैसे चतुर वकील ने भी कोई बहस नहीं की.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह कोई नई बात नहीं है. 7 वर्ष पूर्व 2018 में भी राज पुरोहित ने मोदी के भगवान विष्णु होने का राज राजस्थान के बीजेपी कार्यकर्ता सम्मेलन में

बताया था. कण-कण में भगवान और कंकर में शंकर देखने वाले लोग समस्त सृष्टि में ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करते हैं. राज पुरोहित को भी मोदी में शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी वनमाला से सुशोभित विष्णु भगवान के दर्शन हो रहे हैं. ईश्वर सर्वव्यापी व सर्वशक्तिमान है. वह किसी भी रूप में कहीं भी प्रकट हो सकता है. राज पुरोहित ने भगवान विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण व बुद्ध व कल्कि के बाद 11 वां मोदी अवतार देखा है. अयोध्या के राम मंदिर के बाद अब राज पुरोहित चाहें तो मोदी मंदिर बनवा सकते हैं. भगवान राम के पास धनुष-बाण है और श्रीकृष्ण के हाथ में सुदर्शन चक्र ! मोदी भी चाहें तो अपने हाथ में तमिलनाडु से लाया हुआ राजदंड 'सेंगोल' पकड़ सकते हैं. भगवान राम अयोध्या से लंका गए थे. श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा और वहां से द्वारका गए थे लेकिन मोदी ने विश्व के तमाम देशों का दौरा कर वहां के राष्ट्राध्यक्षों व निवासियों को अपना दिव्यदर्शन दिया. जो लोग ईश्वरीय संदेश से अवगत होने के लिए गीता या रामायण का पाठ नहीं कर पाते, वे श्रद्धाभाव से आंख मूंदकर पीएम मोदी की 'मन की बात' सुन सकते हैं.

हमने कहा, सारी बातचीत का सार यही है कि सबकी अपनी-अपनी भावना है. शास्त्रों में भी राजा या शासक को ईश्वर के समान बताया गया है. इसके अलावा यह भी कहा जाता है- जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ! जब लोग पत्थर को सिंदूर लगाकर भगवान के रूप में पूजते हैं तो निष्ठावान पार्टीजनों को भी ऑपरेशन सिंदूर करवाने वाले मोदी में विष्णु अवतार देखने का पूरा अधिकार है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11978 -डॉ. सागर खादीवाला

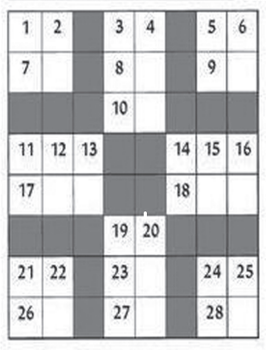

बाएं से दाएं

1. रीति-रिवाज, प्रणाली 3. अस्थिर, चंचल, चलायमान, जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता हो 5. कोलाहल, जोर की आवाज 7. बुनी हुई जालीदार चीज जिसमें मछलियां-चिड़िया फंसाई जाती हैं 8. पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह 9. किसी बिक्री की वस्तु का मूल्य, दर 10. एक सी वस्तुओं की माला 11. स्थान 14. निरपेक्ष, परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला 17. जिसकी (पानी) थाह बहुत नीचे हो, जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो 18. बलवान, जिसके साथ सेना हो 19. समीप, निकट 21. वय, उम्र 23. घरों की दो पंक्तियों के मध्य का पतला एवं संकरा मार्ग 24.क्षुधा, खाने की इच्छा 26. आक्रमण, चढ़ाई, दौड़ 27. होंठ (उर्दू) 28. निशा, रजनी

ऊपर से नीचे

1. रिआया, किसी देश में रहने वाला जनसमूह 2. बड़ी थाली 3. चंचल, स्थिर न रहनेवाला 4. झिड़की 5. सजावट, सुंदरता, कांति 6. ध्वनि, गुंजार, आवाज 11. संसार 12. ग्रहण करने या पकड़ने की क्रिया या भाव 13. सब्ज, घास या पत्तियों के रंग का 14. तैसा, वैसा 15. पानी रखने का बड़ा बर्तन (अं.) 16. जगह, भूमि 19. विक्षिप्त 20. सूली, ईसा मसीह को सूली देने की टिकटी 21. दो समान भागों में से एक, अर्ध 22. युवक, जवान 24. मिट्टी की तरह मटमैला रंग, गोरा 25. पत्र

Solution 11977

स	ल	स	ला	ना	■	मो	ह
तु	ला	द्रा	न	■	च	म	क
ष	■	च	त	र	■	■	ला
■	न	र	■	ल	■	टो	ना
प्र	वी	ण	■	पा	च	क	■
जा	न	■	ब	र	क	रा	र
प	ता	का	■	खी	रा	■	ग
ति	■	ग	श्त	■	ना	क	ड़ा

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, वर्ष केमध्य में सत्ता सुख मिलेगा, स्थाई लाभ कायोग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, अधिकारियोंका सहयोग मिलेगा, भागदौड़ के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारियों से मतभेद में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांति का अनुभव करेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मतभेद भी होंगे, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतोष रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम का फल अधिक प्राप्त होने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ से अच्छी सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक महत्वाकांक्षी होगा, अपने कामकाज में अच्छी तरह निपुण होगा, बालक को जब क्रोध आयेगा, तो जल्द शांत नहीं होगा, अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, व्यवहार कुशलता रहेगी, अन्याय को सहन नहीं करेगा, खेलों के प्रति रूचि रहेगी.

मेष- कार्यस्थल पर अपने व्यवहार को संयमित रखें, कार्य करवाने में आसानी होगी, बांधव विरोध होगा, अचानक नये खर्च सामने आ सकते है.

वृषभ- जितनी मेहनत करेंगे, उतना ज्यादा लाभ होगा, यदि आप लंबी यात्रा का प्रयास कर रहे हैं, तो उसमें सफलता मिलेगी, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी.

मिथुन- सफलता के बावजूद निराशा का अनुभव कर सकते हैं, दायित्वों की पूर्ति होगी, अधिकारियों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे, नवीन कार्यों में सुधार होगा.

कर्क- अकेलेपन से उबरने में दोस्त आपकी मदद करेंगे, आर्थिक मामलों में किसी तरह का जोखिम न लें, कार्यों की अधिकता से चिड़चिडापन रह सकता है.

सिंह- बच्चों को जोखिम के कार्यों से दूर रखें, धन लाभ होगा, पारिवारिक सुख समृद्धि बढेगी, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, आर्थिक कार्यों में गति आयेगी.

कन्या- कार्यस्थल पर लोग विरोध करेंगे, लेकिन आप चतुराई से काम बना लेंगे, मातृपक्ष से सुखद समाचारों की प्राप्ति होगी, आत्म विश्वास बना रहेगा.

तुला- नये मित्र बनेंगे जो आगे बढ़ने मे सहायक रहेंगे, आर्थिक कार्यों में समस्याओं का समाधान होगा, सुखद समाचार मिलने से प्रसननता होगी.

वृश्चिक- लोग आपका व्यवहार देखकर हर संभव मदद को तैयार रहेंगे, कामकाज में मन लगेगा, प्रसन्नता रहेगी, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

धनु- नए समझौते में घर के बुजुर्ग की सलाह उपयोगी रहेगी, मनोरंजक यात्रा होगी, आर्थिक मामलों में सावधानी रखें, जबावदारी का काम बनेगा.

मकर- जरा सी गलती से बनी बनाई बात बिगड़ सकती है, आकस्मिक लाभ का योग है. नये लोगों से संबंध स्थापित होंगे, पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कुम्भ- आप जिन लोगों को अपना विश्वासपात्र मान रहे हैं, वे नुकसान पहुंचायेंगे, सावधानी रखें, स्वत: के संबंध में चिन्ता रह सकती है, कामकाज अपूर्ण रहेंगे.

मीन- आर्थिक दृष्टि से समय उतार चढाव वाला रहेगा, लापरवाहियों के कारण नुकसान होगा, पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता आयेगी, सम्मान प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

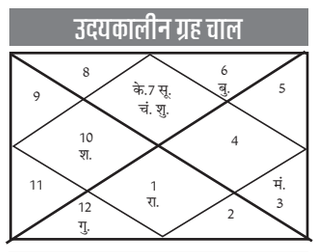

पंचांग

1रा.मि. 08 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल षष्ठी बुधवासरे रात 2/10, हस्त नक्षत्रे रात 10/40, सिद्ध योगे रात 5/17, कौलव करणे सू.उ. 5/23 सू.अ. 6/37, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक-8,0,5.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल षष्ठी को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, गुड़ खांड, मूँग, मोठ, दलहन में तेजी होगी, जूट, पाट, बारदाना, सन् आदि मेंउतार चढ़ाव के साथ तेजी होगी, जूट, पाट, सन आदि में घटाबढ़ी होगी, गेहूँ, जौ, चना, का रूख नरमी का रहेगा. भाग्यांक 4254 है.

SUDOKU 7110

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7109

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1